चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

1. लेखक मनुष्य को मूलतः चार्ली मानता है, सुपरमैन नहीं क्यों?
लेखक का कहना है कि मनुष्य चार्ली के समान एक साधारण इंसान होता है। उससे भी गलतियाँ होती हैं। साधारण मनुष्य सुपरमैन नहीं हो सकता। हर मनुष्य को जीवन के वास्तविक संघर्षों में जीना पड़ता है। हर व्यक्ति को अपमान, छल, तिरस्कार, प्रेम आकर्षण आदि खट्टे-मीठे अनुभवों से गुजरना पड़ता है। सुपरमैन की धारणा कोरी कल्पना है, वास्तविक नहीं।

2. चार्ली चैप्लिन की फिल्में बुद्धि पर नहीं भावनाओं पर कैसे टिकी हैं?
चार्ली चैप्लिन बुद्धि के स्थान पर भावना को ज्यादा महत्व देते थे। उन्होंने अपनी फिल्मों में मानवीय भावनाओं का चित्रण किया है। वे तथा उनके पात्र सोच समझ कर क्रिया नहीं करते, अपितु मन में उठी भावनाओं के अनुरुप व्यवहार करते हैं।

3. चार्ली क्यों महानतम अवसरों पर हँसता है?
चार्ली ने जीवन के महानतम और गरिमामय अवसरों का खोखलापन देख चुका था। वह बड़े-बड़े गर्वोन्मत शासकों की व्यर्थता को जान चुका था। वह जानता था कि एक सामान्य इंसान भी गलती कर सकता है। स्वयं पर हँसने की क्षमता चार्ली में ही दिखाई देती है। वह बताना चाहता था कि बड़े-बड़े लोग भी उतने ही क्षुद्र लालची, तुच्छ और नीच हैं जितने कि आम लोग।

4. चार्ली चैप्लिन की फिल्मों के दर्शक कौन थे?
चार्ली चैप्लिन की फिल्मों को हर वर्ग पसंद करता था चाहे वे पागलखाने के मरीज हों सिरफिरे पागल हों या आइंस्टीन जैसे महान वैज्ञानिक हों, सब चार्लीचैप्लिन को बेहद पसंद करते थे।

5. चार्ली चैप्लिन कौन था ? वह सबसे ज्यादा स्वयं पर कब हँसता है ?

चार्ली चैप्लिन एक महान हास्य अभिनेता था। उसमें स्वयं पर हँसने का गुण था। वह स्वयं पर सबसे अधिक तब हँसता था जब वह गर्व विश्वास, सफलता, सभ्यता संस्कृति और समृद्धि की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच जाता था।

6. चार्ली चैप्लिन की फिल्मों के दर्शक कौन थे ?

चार्ली चैप्लिन की फिल्मों को हर कोई पसंद करता था। चाहे वे पागलखाने के मरीज हो, सिरफिरे पागल हो या आइंस्टीन जैसे महान वैज्ञानिक हों, सब चार्ली चैप्लिन को बेहद पसंद करते थे।

7. चार्ली चैप्लिन के व्यक्तित्व की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए

चार्ली चैप्लिन का व्यक्तित्व साधारण होते हुए भी असाधारण था। उसने बहुत गरीबी, संघर्ष और शोषण का सामना किया। इसलिए उसने अपने अभिनय में भी गरीबों और साधारण लोगों के प्रति सहानुभूति रखी।

चार्ली चैप्लिन ने किसी खास वर्ग, जाति, देश या वर्ण का पक्ष नहीं लिया। उसने समूचे मानव-मन को अभिव्यक्त किया। उसका अभिनय भाषाहीन होते हुए भी सजीव था।

8. चार्ली चैप्लिन की फिल्म-कला को लोकतांत्रिक क्यों कहा गया है ?

चार्ली चैप्लिन की फिल्म-कला को लोकतांत्रिक इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने किसी एक विशेष वर्ग, जाति समूह या वर्ण के लिए नहीं, बल्कि विश्व के सभी लोगों के लिए फिल्में बनाईं। इसलिए उनकी फिल्में सभी देशों के सब लोगों को प्रिय लगीं।

मिलते हैं।

भारत में होली के त्योहार पर लोग अपने पर हँसते हैं। उस दिन लोग मूर्ख-सम्मेलनों का आयोजन करके स्वयं को महामूर्ख सिद्ध करने में भी बुरा नहीं मानते। दूसरे, भारत के गाँवों में लोग लोक-संस्कृति के उत्सवों में स्वयं पर हँस लेते हैं। भारत में स्वयं पर हँसने की परंपरा कम ही है।

10. चार्ली चैप्लिन ने वर्ग तथा वर्ण व्यवस्था को कैसे तोड़ा।

प्राय: फिल्मों में भी वर्ग और वर्ण व्यवस्था का बोलबाला है। बहुत से फिल्म-निर्माता विशेष प्रकार के वर्गों, जातियों, समूहों या वर्गों के लिए फिल्में बनाते हैं। कुछ फिल्में कला फिल्में होती हैं। उनके दर्शक विशिष्ट होते हैं, कुछ फिल्में धार्मिक, राजनीतिक, या विशेष जाति की भावनाओं पर आधारित होती हैं। परंतु चार्ली चैप्लिन ने ऐसी फिल्में बनाई जिनका आनंद विश्व का कोई भी प्राणी ले सकता है। उसकी फिल्मों को मरीज तथा आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक भी देखते थे। इस तरह वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था का कोई मतलब नहीं रह गया।

11. चार्ली का चरित्र दर्शकों को मैं की नहीं 'हम' की प्रतीति कराता था कैसे?

चार्ली का कहना है कि सभी साधारण इंसान हैं कोई सुपरमैन नहीं है। इसलिए मैं की आवश्यकता नहीं है। दर्शकों को परेशानी में पड़े हुए किसी को भी देख कर लगता था कि ये तो स्थिति मेरे साथ भी हो सकती है।

12. कौन लोग चार्ली की फिल्म कला पर हमला बोलते हैं और क्यों?

जो लोग समाज में समानता नहीं चाहते। जो लोग अपने-अपने वर्ग पर एकाधिकार चाहते हैं। जो चार्ली की कार्यशैली को पसंद नहीं करते, जिन्हें

हँस सकते हैं ऐसे लोगों ने चार्ली की फिल्म कला पर हमला बोला।

13. चार्ली की फिल्मों के सार्वभौमिक होने का क्या कारण था?
चार्ली की फिल्में सार्वभौमिक इसलिए बन पाईं क्योंकि उनमें भाषा की बजाय मानवीय क्रियाएँ अधिक सजीव तथा स्पष्ट थीं।
चार्ली की फिल्मों को समय सीमा से बाँध कर नहीं रखा जा सकता। हर जगह के लोग उसकी फिल्मों को पसंद करते हैं। चाहे देश हो या विदेश चार्ली की फिल्म कला को पसंद किया जाता है। मानवीय क्रियाओं भाषा के स्थान पर अधिक सजीव थीं।

14. चार्ली चैप्लिन की फिल्में शासकों को क्यों नापसंद हैं।
चार्ली चैप्लिन शासकों को भी तुच्छ सिद्ध कर देता है उनकी कमजोरियों को उजागर करता है। शासक कभी जनता के सामने नंगा होना नहीं चाहते। इसलिए वे चार्ली चैप्लिन की फिल्मों को नापसंद करते हैं।

15. राजकपूर ने चार्ली से प्रभावित होकर कैसी फिल्में बनाई?
राजकपूर ने चार्ली की फिल्म कला से प्रभावित होकर 'आवारा' 'श्री 420' जैसी फिल्में बनाई। इन फिल्मों में खानाबदोशों, आवारागर्दी करने वाले, अपने पर हँसनेवालों तथा करुण हास्य का मेल करने वाले पात्रों का वर्णन हुआ है।

16. चार्ली चैप्लिन का बचपन कैसे बीता?
चार्ली चैप्लिन का जीवन घोर कष्टों में बीता। उसकी माता व्यवसाय से साधारण किस्म की मंचीय

हालत में पागल हो गई थी। ऐसी कठिन परिस्थिति में में चार्ली चैप्लिन ने बड़े-बड़े पूँजीपतियों और सामंतो की घोर उपेक्षा सही। घर में भयंकर निर्धनता थी। उद्योगपतियों से चार्ली को अनादर ही मिला।

17. भारतीय सौंदर्यशास्त्र ने चार्ली की कला को पानी में तैरती बतख की तरह स्वीकार कर लिया - व्याख्या कीजिए।
भारतीय सौंदर्यशास्त्र और चार्ली की कला में कुछ अंतर है। भारत में करुणा तथा हास्य का कोई मेल नहीं है। परंतु चार्ली ने अपनी फिल्मों में सफलतापूर्वक करुणा और हास्य का मेल कराया। भारतीय सौंदर्यशास्त्र ने तब भी चार्ली की कला का सम्मान किया। जैसे बतख पानी को स्वीकारती है उसी प्रकार भारतीय सौन्दर्यशास्त्र ने चार्ली की फिल्म कला को स्वीकारा।

18. बचपन के कौन से संस्कार चार्ली चैप्लिन के जीवन में अंत तक बने रहे?
चार्ली चैप्लिन का जीवन भयंकर गरीबी में बीता। उसे माँ का पागलपन सहना पड़ा। पितृविहीन जीवन जीना पड़ा। उसने पूँजीपतियों की दुत्कार भी सहा। इन कठिनाइयों को सहकर चार्ली के जीवन में अच्छे गुणों का समावेश हुआ

19. भारतीय हास्य परंपरा और चार्ली के हास्य में मूल रूप से क्या अंतर है?
भारतीय हास्य परंपरा में हास्य केवल दूसरों पर अवलंबित होता है। उसमे प्रायः दूसरों को पीड़ित करने वालों की हँसी उड़ाई जाती है। संस्कृत नाटकों में राज्याधिकारियों की बदतमीजियों की मजाक भी उड़ाई जाती है किंतु उसमें करुणा और हास्य का मेल नहीं दिखाया जाता। भारत में स्वयं पर हँसने की परंपरा नहीं है।

20. चार्ली चैप्लिन के जीवन में भारतीयता के संस्कार भी थे कैसे ?

चार्ली चैप्लिन की नानी खानाबदोश जाति की थीं। ये खानाबदोश कभी भारत से यूरोप में गए थे और जिसी सहसार थे। चार्ली चैप्लिन ने भी लगभग घुमंतुओं जैसा जीवन जिया और अपनी फिल्मों में आवारागर्द खानाबदोश जीवन का चित्रण किया। इस प्रकार उनके जीवन में भारतीयता के रंग का भरपूर असर रहा।

नमक

1. साहित्यकार एक दूसरे को गहराई से समझते हैं- सिद्ध कीजिए।

सफिया और सुनीलदास गुप्त दोनों साहित्य प्रेमी हैं। इसलिए दोनों एक दूसरे की भावना को अच्छी तरह समझते हैं। सुनीलदास गुप्त सफिया को दिखाते हैं कि बांगलादेश का प्रसिद्ध कवि शमुलइसलाम उसका प्यारा दोस्त था।उसकी बातें याद करके खो जाता है। उसे वे दिन याद आते हैं जब वह नजरुल और टैगोर को एक साथ पढ़ा करता था। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि साहित्य एक दूसरे को जल्दी समीप ला सकता है।

2. सिख बीवी को देखकर सफिया क्यों हैरान रह गई?

वह उसकी माँ की हमशक्ल थी। सफिया की माँ के समान ही भारी भरकम शरीर, छोटी चमकदार आँखें जिनसे प्रेम, मलमल साहत और करुणा की रोशनी निकल रही थी। उसकी माँ जैसा ही सुरख। वैसा ही बारीक मलमल का दुपट्टा जैसा उसकी माँ मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं।

3. भारत-पाक संबंधों में एकता किस प्रकार दिखाई देती है?

भारत-पाक की धरती, मूलतः एक है। यहां के निवासियों की बोली, भाषा, रंग-ढंग, पहनावा और गालियां भी एक सी हैं। दोनों देशों में ऐसे नागरिक रहते हैं जिनकी जड़ें दूसरे देश में हैं। इस कारण वे मूल रूप से दोनों देशों को अपना मानते हैं। वे अपनी जन्मभूमि से स्वाभाविक लगाव रखते हैं तो अपनी वर्तमान भूमि से कानूनी रूप से बँधे हुए हैं।

4. सफिया का भाई अपनी बहन को अदीब कलम के अदीबों पर क्या टिप्पणी करता है?

सफिया का भाई जानता है कि उसकी बहन साहित्यकार

कहता है कि उनका दिमाग थोड़ा सा जरूर घूमा हुआ होता है आशय यह है कि वे भावनात्मक जोश में आकर नियम कायदों की परवाह कम किया करते हैं।

5. सफिया ने कस्टम अधिकारी से बातचीत करते समय व्यवहार कुशलता का परिचय दिया ?
सफिया व्यवहार कुशल थी। वह मानवीय रिश्तो के मर्म को समझती थी। वह जानती थी कि यदि किसी व्यक्ति से भावात्मक संबंध जोड़ लिए जाएं या विनयपूर्वक निवेदन किया जाए तो वह उसे टाल नहीं सकता। इस कारण उसने पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी से पहले उसका वतन पूछा। इससे व्यक्तिगत संबंध जुड़ गया। जब उसने अपना वतन दिल्ली बताया तो यह संबंध और अधिक गहरा हो गया। फिर तो मुहब्बत का तोहफा कानून की नजरों के सामने से साफ निकल गया। इसी प्रकार सफिया ने सुनीलदास गुप्त के भी मर्म को छुआ और बात बन गई।

6. सफिया इंसानियत पर विश्वास करती है - सिद्ध कीजिए
सफिया को इंसानियत पर गहरा विश्वास है। उसे लगता है कि कस्टम अधिकारी नमक जैसी तुच्छ चीज को ले जाने देंगे। कानून के विरुद्ध होते हुए भी उसे रोकेंगे नहीं। वे मानती हैं कि कस्टम अधिकारी भी भावपूर्ण मनुष्य होते हैं।

7. सफिया और उसके भाई के स्वभावगत अंतर को स्पष्ट कीजिए
सफिया इनसानियत कोमलता और भावुकता में विश्वास रखती है। वह आदमी की उदारता और मानवीय समझ पर भरोसा रखती है। उसका भाई कटूर और कठोर है। वह न तो दूसरे धर्म के लोगों के लिए तोहफा ले जाने का समर्थक है और न ही उसे कस्टम अधिकारियों से किसी रियायत की अपेक्षा है।

8. सफिया नमक की पुड़िया को कीनुओं की टोकरी के नीचे क्यों छिपाती है ?
सफिया अपनी मुँहबोली माँ के लिए लाहौरी नमक

कानूनी है। कस्टम अधिकारियों की नजर पड़ गई तो किसी भी सूरत में नमक नहीं ले जाने देंगे। इस भय से उसने नमक को कीनुओं की टोकरी के नीचे छिपाने का फैसला किया।

9. सफिया के मन में क्या द्वंद्व चल रहा था?
सफिया सिख बीबी के लिए नमक का तोहफा ले जाना चाहती थी लेकिन कानून के दायरे में। वह सोच रही थी कि नमक ले जाकर कस्टमवालों के सामने रख दूं। फिर उसे लगा कि अगर कस्टम वालों ने न ले जाने दिया तो मजबूरी में नमक छोड़ना पड़ेगा। फिर उसे लगता है कि वह तो सैयद है। वायदा किया है तो निभाना तो पड़ेगा ही। इस तरह नमक को कैसे ले जाएं बता कर या छिपा कर यही द्वंद्व उसके मन में चल रहा था।

10. इस कहानी में अपने वतन के लिए किस प्रकार का भाव व्यक्त हुआ है?
इस कहानी में तीन पात्र विस्थापित हैं। तीनों अपनी जन्मभूमि से बिछुड़े हुए हैं। तीनों के मन में अपनी जमीन के प्रति, अपने वतन के प्रति असीम लगाव है। तीनों गहरी सांस लेकर अपने वतन को याद करते हैं। सिख बीबी अमृतसर में रह रही है और साड़ा लाहौर कह कर अपने वतन को याद करती है। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी दिल्ली में जन्मा और पाकिस्तान का निवासी है वह सफिया से कहता है "जामा मस्जिद की सीढ़ियों को मेरा सलाम कहियेगा" सुनीलदास गुप्ता ढाका में पैदा हुआ है वह कहता है हमारे यहां के 'डाभ' की क्या बात हमारी जमीन हमारे पानी का मजा ही कुछ और है।

11. सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?
सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने के लिए

1. भारत में नमक की कोई कमी नहीं है। अतः इसे पाकिस्तानी नमक ले जाने की कोई जरूरत नहीं है।
2. पाकिस्तान से भारत में नमक ले जाना गैर कानूनी है,
3. कस्टम अधिकारी नमक पाए जाने पर उसके सामान की चिंदी-चिंदी कर डालेंगे और पकड़े जाने का अपमान भी होगा।

12. अंत में सफिया ने क्या निर्णय लिया?
दुख से निकलते हुए सफिया ने निर्णय लिया कि नमक की पुड़िया बीनुओं की टोकरी की तह में रख ली जाए फलों को कोई नहीं देखेगा क्योंकि आते वक्त उसने देखा था कि लोग भारत से केले ले जा रहे थे और पाकिस्तान से बीनूला रहे थे। कस्टम वाले फलों की टोकरी को नहीं देख रहे थे।

13. संबंध भावना की दीवार पर टिकते हैं, बराबरी या हिस्सेदारी की दीवार पर नहीं - सिद्ध कीजिए।
मानवीय संबंधों का आधार भावनात्मक होता है। यदि किसी को मन से माँ, बेटा, भाई या और कुछ मान लिया जाए तो वही संबंध सुदृढ़ होता है। सफिया ने सिख बीबी को देखते ही माँ मान लिया। उसने इस संबंध की रक्षा के लिए भरसक संघर्ष किया। उधर उसके सगे भाई ने बँटवारे-बखरे की बातें की। सफिया ने उसकी इन बातों की उपेक्षा की। अतः सिद्ध होता है कि न तो समानता आदि आर्थिक आधार रिश्तों में सीमेंट का काम करते हैं न ही रक्त संबंध। वास्तविक संबंध तो भावनात्मक सच्चाई पर आधारित होते हैं।

14. जब सफिया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप क्यों खड़े थे?
जब सफिया अमृतसर के पुल पर चढ़ रही थी तो कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए

अपने वतन ढाका की याद आ गई थी। वे साफिया और सिराज बीबी की भावनाओं से भी अभिभूत थे। उन्हें लगा कि देश को बनावटी सीमाओं ने पार लोगों के दिल आपस में कितने मिलते हैं और अपनी जन्मभूमि के लिए कितने तरसते हैं। इन्हें क्यों अपने वतन से अलग कर दिया गया है।

15. साफिया ने नमक की पुड़िया कस्टम अधिकारी के सामने क्यों रख दी?

16 नमक कहानी में नमक की पुड़िया इतनी महत्वपूर्ण क्यों हो गई है? कस्टम अधिकारी उसे लौटाते हुए भावुक क्यों हो उठा?
नमक कहानी में नमक की पुड़िया मानवीय भाईचारे और प्रेम की प्रतीक बन गई। कस्टम अधिकारी को नमक की पुड़िया देखकर अपने वतन की याद आ गई। अतः वह भावुक हो उठा।

17. उनको यह नमक देते वक्त मेरी तरफ से कहियेगा कि लाहौर अभी तक अका वतन है और देहलीमेरा तो बाकी सब रफ्ता-रफ्ता ठीक हो जाएगा। "नमक" कहानी में लाहौर के कस्टम अधिकारी के इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तीन तर्क दीजिए।
कस्टम अधिकारी का यह कथन बिल्कुल ठीक है। यदि लाहौर कस्टम अधिकारी दिल्ली को अपना वतन मानेगा तो वह कभी दिल्ली की हानि नहीं होने देगा वह कभी दिल्ली वासियों के साथ भेदभाव नहीं रखेगा, बल्कि उन्हें अपना मानकर उनसे प्रेम रखेगा। ऐसी स्थिति में भारत पाकिस्तान के बीच घृणा कम होगी और रिश्ते मजबूत होंगे।

18. अगर सभी का विभाग इन अदीबों की तरह घूमा हुआ होता तो यह दुनिया कुछ बेहतर ही जगह होती मैया।" सफिया ने ऐसा क्यों कहा?

सफिया के पुलिस अफसर भाई ने सफिया से कहा था- "आप अदीब ठहरीं और सभी अदीबों का विभाग थोड़ा सा तो जरूर ही घूमा हुआ होता है।" इसके उत्तर में ही सफिया ने उपर्युक्त वाक्य कहा था जिसके द्वारा वह यह कहना चाहती है कि साहित्यकार प्रेम करुणा उदारता सहिष्णुता मानवता व भाईचारे का संदेश देता है। अतः यदि सभी व्यक्ति अदीबों की तरह के होते तो दुनिया में घृणा, द्वेष क्रोध, संघर्ष, आदि न रहते और दुनिया मौजूदा स्थिति से अच्छी होती।

19. भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के लिए दोनों सरकारें प्रयासरत हैं। व्यक्तिगत तौर पर आप इसमें क्या योगदान दे सकते हैं?

- सबसे पहले मन से शत्रुभाव को बाहर निकालें।
- यदि कोई पाकिस्तानी नागरिक किसी प्रसंग में भारत आता है, तो उसे इतना स्नेह व सम्मान दें कि वह भारत के प्रति अच्छी धारणा लेकर जाए।
- यदि कभी मौका मिले तो पाकिस्तान घूमने जाएं और वहाँ के लोगों को प्रेम व भाईचारे का पैगाम दें।

20. फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दुपट्टा आँचल में समा जाते हैं।

सिख बीबी को लाहौर याद आ रहा है क्योंकि उसका वतन तो लाहौर है। लाहौर की याद में वह इतनी भावुक हो उठी कि उसकी आँखों से आँसू निकलकर उसके सफेद मलमल के दुपट्टे पर टपक पड़े।